2025
संस्करण

विद्यालय चेतना सत्र

TEACHERS OF BIHAR
THE CHANGE MAKERS

शशिधर उज्ज्वल

विद्यालय चेतना सत्र

संकलन :

शशिधर उज्ज्वल
शिक्षक
स्नातकोत्तर, बी.एड.
संपर्क- 7004859980
email- ujjawal.shashidhar007@gmail.com

द्वितीय संस्करण
वैशाख पूर्णिमा
मई, वर्ष **2025**

प्रस्तुति :
टीचर्स ऑफ बिहार
Website : www.teachersofbihar.org

भूमिका

एक कहावत है- "Morning shows the day" अर्थात् किसी चीज की शुरूआत अक्सर उसके समग्र परिणाम का पूर्वाभास कराती है। विद्यालयों में शैक्षिक कार्य की शुरूआत चेतना सत्र से होती है जिसमें प्रधानाध्यापक, शिक्षक-शिक्षिकाओं, बाल संसद, मीना मंच, इको क्लब, यूथ क्लब, किशोरी मंच सहित सभी विद्यार्थियों की भूमिका होती है। निर्धारित समयानुसार विद्यालय खुलने के साथ ही वर्ग-कक्ष, विद्यालय परिसर एवं आस-पास की साफ-सफाई आवश्यक होती है। परिसर में निर्धारित स्थल पर एकत्रित होकर व्यायाम, प्राणायाम, सर्वधर्म प्रार्थना, वन्दना, समाचार वाचन, प्रेरक प्रसंग, मौन, बिहार राज्य प्रार्थना/गीत, अभियान गीत, सुविचार, संविधान की प्रस्तावना, छात्र-शपथ, प्रश्नोत्तरी, कविता, कहानी, पहेलियां, बापू की पाती, राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत प्रधान शिक्षक की उद्घोषणा, शारीरिक स्वच्छता जाँच, महत्वपूर्ण सूचना आदि कई ऐसी गतिविधियां चेतना सत्र के प्रमुख तत्व हैं। ये गतिविधियां चेतना सत्र को न सिर्फ आकर्षक और रूचिकर बनाती है बल्कि छात्रों को ऊर्जान्वित और उत्साहित करती है। जिस तरह से उज्ज्वल, साफ सुबह एक सुखद दिन का संकेत देती है, उसी तरह चेतना सत्र से ही विद्यालय की दैनिक कार्यकलापों की झलक मिल जाती है।

चेतना सत्र में शामिल गतिविधियों का बेहतर प्रबंधन एवं संचालन विद्यार्थियों को न सिर्फ दिनभर विद्यालय में सम्पादित होनेवाले क्रियाकलापों के लिए शारीरिक एवं मानसिक रूप से तैयार कर देता है, बल्कि आनेवाली दिवसों की पूर्व तैयारी और योजना के महत्व पर जोर भी देती है।

विद्यालयों में सही दिशानिर्देश एवं हस्तपुस्तिका के अभाव में बच्चे प्रार्थना, गान आदि में सही उच्चारण नहीं कर पाते या फिर उन्हें चेतना सत्र के कार्यक्रम की पूर्व रूपरेखा तैयार करने में कठिनाई होती है। हम अक्सर असमंजस में रहते हैं कि चेतना सत्र को प्रभावी बनाने के लिए किन-किन चीजों को शामिल किया जाए?

चेतना सत्र में शामिल की जाने वाली विषयवस्तु को विद्यालय की प्रकृति, स्थान, मौसम तथा समय प्रभावित करती है। चेतना सत्र ज्यादा लम्बी या उबाऊ नहीं होना चाहिए। 15–20 मिनट का समय इसके लिए आदर्श होता है। चेतना सत्र की विषयवस्तु के दो प्रकार हो सकते हैं- पहला अनिवार्य तथा दूसरा ऐच्छिक। चेतना सत्र के अनिवार्य विषयवस्तु निम्न हो सकते हैं-

- सर्वधर्म प्रार्थना
- बिहार राज्य प्रार्थना
- बिहार राज्य गीत
- राष्ट्रगान
- राष्ट्रगीत

चेतना सत्र के ऐच्छिक विषयवस्तु (किन्ही 3–4 गतिविधियां) निम्न हो सकते हैं-

- गायत्री मन्त्र
- गुरू स्त्रोतम
- लोक कल्याण मंत्र/विश्व शान्ति मंत्र
- सरस्वती वन्दना
- सुविचार
- मौन
- कविता
- कहानी वाचन
- प्रेरक प्रसंग
- पहेलियां
- बापू की पाती
- समाचार वाचन
- अभियान गीत
- देशभक्ति गीत
- संविधान की उद्देशिका

- नागरिकों के मूल अधिकार/कर्तव्य
- छात्र-शपथ
- प्रश्नोत्तरी
- दिवस ज्ञान/जयंती
- विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम (प्रत्येक बुधवार)
- विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम (सुरक्षित शनिवार)
- स्वास्थ्य एवं स्वच्छता जाँच
- आज के सूरज-चंदा का चुनाव
- व्यायाम (पी.टी.)
- नारा/जयकारा
- प्रधानाध्यापक/शिक्षक द्वारा सम्बोधन

समय तथा परिस्थिति के अनुरूप विषयवस्तु में बदलाव होते रहना चाहिए। यह भी ध्यान रखना होगा कि मुख्य प्रार्थना में बदलाव तभी की जाए जब बच्चे इसके लिए तैयार हों वरना चेतना सत्र मखौल बनकर रह जाता है।

चेतना सत्र के बेहतर प्रबंधन के लिए यह भी आवश्यक है कि बच्चे इसके लिए पूर्व में ही साप्ताहिक या दैनिक योजना तैयार कर लें। शिक्षक उन्हें इस कार्य में मदद करें। अब प्रश्न यह है कि चेतना सत्र की पर्याप्त संसाधन या विषयवस्तु कहाँ से प्राप्त किया जाए? बच्चों तथा शिक्षकों के इस समस्या का समाधान के लिए ही इस पुस्तिका में उन सभी तत्वों का समावेश करने का प्रयास किया गया है जिससे चेतना सत्र को सुव्यवस्थित और आकर्षक बनाया जा सके।

आशा है कि टीचर्स ऑफ बिहार द्वारा प्रस्तुत यह पुस्तिका चेतना सत्र को प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण और सकारात्मक भूमिका अदा करेगी। साथ ही कई अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अवसर पर भी बच्चों तथा विद्यालयों का मार्गदर्शन करने में समर्थ होगी। पाठक बन्धुओं से अनुरोध है कि इस पुस्तक को और समृद्ध करने तथा त्रुटियों की ओर ध्यान आकर्षित करने हेतु अपना फीडबैक जरूर देंगें।

धन्यवाद!

विषय सूची

क्रम सं0	विषय	पृष्ठ सं0
1	समझें-सीखे सूचक	08
2	प्रार्थना का महत्व	09
3	प्रणाम का महत्व	10
4	बिहार राज्य प्रार्थना	11
5	बिहार राज्य गीत	12
6	ये है मेरा बिहार	13
7	संविधान की प्रस्तावना (हिन्दी/ अंग्रेजी)	14—15
8	छात्र- प्रतिज्ञा (हिन्दी/ अंग्रेजी/ संस्कृत)	16—18
9	नागरिकों के मूल अधिकार	19
10	नागरिकों के मूल कर्तव्य	20
11	सात सामाजिक बुराइयां	21
12	नागरिक बोध	21
13	गांधी जी का जंतर	22
14	गांधी कथा वाचन	23
15	गांधी जी के अनमोल विचार	24
16	वैष्णव जन तो तेने कहिये	25
17	तू ही राम है तू रहीम है	26
18	हर देश में तू	27
19	ए मालिक तेरे बन्दे हम	28
20	इतनी शक्ति हमें देना दाता	29
21	हमको मन की शक्ति देना	30
22	वह शक्ति हमें दो दयानिधि	31
23	दया कर दान	32
24	मिलता है सच्चा सुख केवल	33
25	दे दे मेरे अधरों को ज्ञान स्वर	34
26	सत्यम शिवम् सुन्दरम	35
27	गायत्री मंत्र	36
28	विविध धर्मों में गायत्री मंत्र का भाव	37
29	गुरू स्त्रोतम्	38
30	परम स्तुति	40
31	लोक कल्याण के लिए प्रार्थना	40
32	विश्व शान्ति मंत्र	41
33	सरस्वती स्तुति	42

34	वर दे वीणा वादिनी	43
35	जय जय हे भगवती सुर भारती	44
36	सरस्वती वन्दना	45
37	अम्ब विमल मति दे	46
38	लिये कर कंज में वीणा	47
39	मां शारदे कहां तू	48
40	हे प्रभु! आनंददाता	49
41	तुम्हीं हो माता	50
42	सुबह सवेरे लेकर तेरा नाम	51
43	ल्ब पे आती है दुआ बनके	52
44	धीरे-धीरे यहां का	53
45	हम लोग हैं ऐसे दिवाने	54
46	घर घर में अलख जगायेंगे	55
47	ले मशाले चल पड़े हैं	56
48	लहु का रंग एक	57
49	तकदीर बदल देंगें	58
50	पढ़ना लिखना सीखो	59
51	चल रे साथी	60
52	हम होंगे कामयाब	61—62
53	हिन्द देश का प्यारा झंडा	63
54	हिन्द देश के निवासी	64
55	विजयी विश्व तिरंगा प्यारा	64
56	सारे जहां से अच्छा हिंदोस्ता हमारा	65
57	कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती	66
58	कविता-हिमाद्री तुंग शृंग से	67
59	कविता-शक्ति और क्षमा	67
60	स्वागत गीत १ और २	68
61	सुविचार	69
62	महत्वपूर्ण दिवस	70
63	नारा- स्कूल चलो अभियान	71
64	मार्चिंग	72—73
65	झंडोत्तोलन	74
66	राष्ट्र-गान	75
67	राष्ट्र-गीत	75
68	जयघोष	76

समझें सीखें–सूचक

1. विद्यालय समय से शुरू और बंद।
2. समय से चेतना सत्र का आयोजन।
3. हर एक बच्चा एवं शिक्षक विद्यालय के समय विद्यालय में उपस्थित।
4. हर एक बच्चा एवं हर एक शिक्षक सीखने की प्रक्रिया में तल्लीन।
5. शिक्षकों का बच्चे के शैक्षिक स्तर की जानकारी एवं उसका संधारण।
6. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन।
7. कक्षा एक के लिए विशिष्ट रूप से निर्धारित पूर्णकालिक शिक्षक।
8. विद्यालय के सभी वर्ग कक्षों में श्यामपट्ट का पूर्ण उपयोग।
9. सभी कक्षाओं में दैनिक शिक्षण–तालिका की उपलब्धता तथा उपयोग।
10. अंतिम घंटी में खेल–कूद, कला तथा सांस्कृतिक गतिविधियां।
11. विघालय में उपलब्ध कराए गये कहानी की किताबों, खेल–सामग्री आदि का उपयोग।
12. मेनू के अनुसार मध्याह्न भोजन का दैनिक वितरण।
13. सक्रिय बाल–संसद तथा मीना–मंच।
14. साफ–सुथरे बच्चे तथा साफ–सुथरा विद्यालय।
15. उपलब्ध पेयजल व्यवस्था एवं शौचालय का उपयोग।
16. विद्यालय परिसर में बागवानी।
17. विद्यालय में उपलब्ध कराये गए अनुदानों का उपयोग।
18. सभी बच्चों के पास अपनी कक्षा की पाठ्य–पुस्तकें उपलब्ध।
19. विद्यालय शिक्षा समिति की बैठक में शिक्षा की गुणवत्ता पर नियमित चर्चा।
20. विद्यालय में साप्ताहिक कक्षावार शिक्षक–अभिभावक की नियमित बैठक।

प्रार्थना का महत्व

महात्मा गाँधी ने कहा है- "प्रार्थना प्रातः कुंजी है तथा शाम को बन्द करने की चटखनी है। यदि हृदय को प्रार्थना के द्वारा न धोया जाय तो आत्मा मैली हो जाती है।" प्रार्थना में वह शक्ति है जिससे हृदय प्रसन्न रहता है, बुद्धि शुद्ध होती है, आचरण श्रेष्ठ बनता है और सामाजिक जीवन में गरिमा प्राप्त होती है।

प्रार्थना हमारे संकल्प की शक्ति को जाग्रत करती है। यह व्यक्ति को कर्म की ओर उद्यत करने हेतु आंतरिक बल, उत्साह और आशा प्रदान करती है। प्रार्थना व्यक्ति के विचारों एवं इच्छाओं को सकारात्मक बनाकर निराशा एवं नकारात्मक भावों को नष्ट करती है। प्रार्थना किसी व्यक्ति के जीवन में शांति लाने के सर्वोत्तम तरीकों में से एक है। चाहे आप शारीरिक या मानसिक रूप से परेशान हों तो प्रार्थना आपके शरीर और मन को ठीक करने में मदद करती है। यह लोगों को जीवन में आशावादी बने रहने के लिए प्रोत्साहित करती है।

प्रार्थना व्यक्तिगत हो सकती है और सामूहिक भी। इसमें शब्दों (मंत्र, गीत आदि) का प्रयोग हो सकता है या प्रार्थना मौन भी हो सकती है। निश्छल हृदय से की गयी प्रार्थना, भक्ति का ही एक रूप है, किन्तु दोनों में एक सूक्ष्म अन्तर है। प्रार्थना वेदना परक होती है, जबकि भक्ति मस्तीपरक। लक्ष्य दोनों का एक ही है। प्रार्थना में आत्मा की कसक होती है। सच्चे मन से की गई प्रार्थना निरर्थक नहीं जाती।

प्रणाम का महत्व

प्रणाम विनयशीलता का प्रतीक है। जितने भी महापुरूष हुए हैं वे सब के सब पहले बालक थे, किशोर थे। अतः विद्यार्थियों को सोचना चाहिए कि जब इतने सारे बालक एवं किशोर महान हो सकते हैं तो हम क्यों नहीं? अब प्रश्न है कि महान बनने के लिए क्या करें? अपने माता-पिता, गुरूजी को प्रतिदिन प्रणाम करें। उनकी आज्ञा का पालन करें। उनकी सेवा करें। उनके अनुकूल बनें। गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी रामचरित मानस में लिखा है-

प्रातःकाल उठि के रघुनाथा। मातु पिता गुरू नावहिं माथा।।
आयुस माँगि करहिं पुर काजा। देखि चरित हरशई मन राजा।।

धर्मशास्त्रों में प्रणाम की महिमा को उजागर करते हुए लिखा गया है-

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम्।।

अर्थात् नित्य बड़ों को प्रणाम करने से, बड़े-बुढ़ों की सेवा करने से व्यक्ति की आयु, विद्या, यश और बल ये चारों चीज बढ़ते हैं। प्रणाम की ऐसी महिमा है कि भारतीय हिन्दू वेद-पुराणों में वर्णित आठ चिरंजीवियों का स्मरण, प्रातःकाल करने से, दीर्घायु प्राप्ति होती है।

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः ।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरंजीविनः।।
सप्तैतान् संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाश्टमम्।
जीवेद वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः।।

बिहार राज्य प्रार्थना

मेरी रफ्तार पे सूरज की किरण नाज करे
ऐसी परवाज दे मालिक कि गगन नाज करे
वे नजर दे कि करूँ कद्र हरेक मजहब की
वे मोहब्बत दे मुझे अमनों अमन नाज करे
मेरी खुशबू से महक जाय ये दुनिया मालिक
मुझको वो फूल बना सारा चमन नाज करे
इल्म कुछ ऐसा दे मैं काम सबों के आऊँ
हौसला ऐसा ही दे गंग जमन नाज करे
आधे रास्ते पे न रूक जाये मुसाफिर के कदम
शौक मंजिल का हो इतना कि थकन नाज करे
दीप से दीप जलायें कि चमक उठे बिहार
ऐसी खूबी दे ऐ मालिक कि वतन नाज करे
जय बिहार जय बिहार जय जय जय जय बिहार

****

'मेरी रफ्तार पे सूरज की किरण नाज करे', शीर्षक बिहार राज्य प्रार्थना के कवि एम. आर. चिश्ती मुजफ्फरपुर जिला स्थित उर्दू माध्यमिक स्कूल (मारवान प्रखंड) के शिक्षक हैं। इसके गायक उदित नारायण हैं।

बिहार राज्य गीत

मेरे भारत के कंठहार
तुझको शत्-शत् वंदन बिहार।
तू वाल्मीकि की रामायण
तू वैशाली का लोकतंत्र
तू बोधित्सव की करूणा है
तू महावीर का शांतिमंत्र
तू नालंदा का ज्ञानदीप
तू ही अक्षत चंदन बिहार
तू है अशोक की धर्मध्वजा
तू गुरूगोविन्द की वाणी है
तू आर्यभट्ट तू शेरशाह
तू कुंवर सिंह बलिदानी है
तू बापू की है कर्मभूमि
धरती का नंदन वन बिहार
तेरी गौरव गाथा अपूर्व
तू विश्व शांति का अग्रदूत
लौटेगा खोया स्वाभिमान
अब जाग चुके तेरे सपूत
अब तू माथे का विजय तिलक
तू आँखों का अंजन बिहार
तुझको शत्-शत् वंदन बिहार
मेरे भारत के कंठहार।।

'मेरे भारत के कंठहार' बिहार राज्य गीत के रचयिता सत्यनारायण हैं जो एक अवकाश प्राप्त इतिहास के शिक्षक एवं सरकारी कर्मचारी हैं। इन्हें १९९१ में गोपाल सिंह नेपाली पुरस्कार एवं २००६ में डॉ. शम्भूनाथ सिंह नवरत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। बिहार राज्य गीत के संगीतकार प्रसिद्ध संगीत निर्देशक शिव कुमार शर्मा एवं हरिप्रसाद चौरसिया हैं।

ये है मेरा बिहार

सीता की जन्मभूमि- ये बिहार
गांधी की कर्मभूमि- ये बिहार
सम्राट अशोक की,
शक्तिभूमि, धर्मभूमि- ये बिहार
ये बिहार

वाल्मिकी ने रची रामायण,
लवकुश को जाने संसार,
ये है मेरा बिहार,
ये है मेरा बिहार, × ४

अँग्रेजन के हाड़ हिलल जब,
कुँवर के घोड़ा गरजल,× २
अस्सी बरस में चढ़ल जवानी,
ई भोजपुरिया चमकल,
राजेन्द्र जी देश के पहिला
राष्ट्रपति बन गइले,
एही माटी के भिखारी ठाकुर
जन जन के मन में समइले,
गिनत-गिनत अँगुरी थक जाई
होऽ होऽ हो हो हो...
गिनत-गिनत अँगुरी थक जाई
महापुरूष हैं हजार
ये है मेरा बिहार,
ये है मेरा बिहार, × ४

विद्यापति के मधुर गीत
से गुंजले आम-अमराई× २
पटना में गुरू गोविन्द सिंह के
गुरूद्वारा है भाई
गंगा मईया अमृतधारा
के रसपान करइलथीन
सीता मइया ई धरती के
जग में मान बढइलथीन
कहे बिहारी, प्रेमभूमि हऽऽ
होऽ होऽ हो हो हो...
कहे बिहारी, प्रेमभूमि हऽऽ
करिहें के इंकार
ये है मेरा बिहार,
ये है मेरा बिहार, × ४

मगध जगह अइसन है भईया
जहाँ बनल राजधानी × २
राजा अशोक के चललई शासन
का इतिहास बखानी
बुद्ध के ज्ञान इहैं पर मिललई
चर्चा विदेश में भइलई
चीन, जापान, नेपाल, श्री लंका,
बौद्ध धर्म अपनइलई
जैन धर्म महावीर चलाये
लिये यहीं अवतार
ये है मेरा बिहार,
ये है मेरा बिहार, × ४

वाल्मिकी ने रची रामायण,
लवकुश को जाने संसार,
ये है मेरा बिहार,
ये है मेरा बिहार, × ४

संविधान की प्रस्तावना

"हम भारत के लोग, भारत को एक

सम्पूर्ण प्रभुत्व संपन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष

लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा

उनके समस्त नागरिकों को;

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता,

प्रतिष्ठा और अवसर की समानता,

प्राप्त करने के लिए तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा

और राष्ट्र की एकता और अखण्डता सुनिश्चित करने वाली

बंधुता बढाने के लिए दृढ़संकल्प होकर अपनी इस

संविधान सभा में आज तारीख २६-११-१९४९ ईस्वी

(मिति मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत दो हजार छह विक्रमी)

को एतद् इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित

और आत्मार्पित करते हैं।"

जय हिन्द!

THE PREAMBLE

WE' THE PEOPLE OF INDIA,

having solemnly resolved to

constitute India into a

SOVEREIGN, SOCIALIST, SECULAR,

DEMOCRATIC REPUBLIC

and to secure to all its citizens:

JUSTICE, social, economic and political;

LIBERTY of thought, expression, belief, faith and worship,

EQUALITY of status and of opportunity

and to promote among them all

FRATERNITY assuring the dignity of the

individual and the unity and integrity of the Nation;

IN OUR CONSTITUENT ASSEMBLY

this twenty-sixth day of November 1949,

do **HEREBY ADOPT, ENACT AND**

GIVE TO OURSELVES THIS CONSTITUTION."

Jai Hind!!

छात्र–प्रतिज्ञा

"भारत हमारा देश है।
हम सब भारतवासी भाई–बहन हैं।
हमें अपना देश प्राणों से प्यारा है और
इसकी समृद्धि और विविध संस्कृति पर हमें गर्व है।
हम इसके सुयोग्य अधिकारी बनने का
सदा प्रयत्न करते रहेंगें।
हम अपने माता–पिता, शिक्षकों व गुरूजनों
का आदर करेंगें और
सबके साथ शिष्टता का व्यवहार करेंगें।
हम अपने देश और देशवासियों के प्रति
वफादार रहने कि प्रतिज्ञा करते हैं।
उनके कल्याण और समृद्धि में हमारा सुख निहित है।"
जय हिन्द!!

The Student Pledge

" India is my country,
all Indians are, my brothers and sisters.
I love my country and
I am proud of its rich and varied heritage.
I shall be always strive
to be worthy of it.
I shall give my parents, teachers
and all elders respect
and treat everyone with courtesy.
to my country, my people, my school
I pledge my devotion
in their well being and
prosperity alone lies my happiness."
Jai Hind!!

छात्र-प्रतिज्ञां

“भारत अस्माकं मातृभूमिः।
भारतीयाः सर्वे अस्माकं भ्रातरः।
इयं मातृभूमिः प्राणेभ्योऽपि प्रियतरां भवति।
अस्या समृद्धौ विविधः संस्कृतौ च वयं सन्मानयेम।
वयं अस्याः सुयोग्या अधिकारिणो भवितुं सदा प्रयत्नःभवेम्।
अस्माकं माता-पितरौ गुरूश्च सन्मानयेम।
सर्वे सह शिष्टया व्यवहारेम।
भारतं भारतीयांश्च विश्वासपात्रतां प्रतिजानिमः।
तेषामेव कल्याणे समृद्धौ च अस्माकं सुखम् निहितमस्ति।”

जयतु भारतं

भारत का संविधान

भाग–3 (अनुच्छेद 12–35)

मूल अधिकार

समता का अधिकार

- विधि के समक्ष एवं विधियों के समान संरक्षण;
- धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्मस्थान के आधार पर;
- लोक नियोजन के विषय में;
- अस्पृश्यता और उपाधियों का अंत।

स्वातंत्र्य-अधिकार

- अभिव्यक्ति, सम्मेलन, संघ, संचरण, निवास और वृत्ति का स्वातंत्र्य;
- अपराधों के लिए दोष सिद्धि के संबंध में संरक्षण;
- प्राण और दैहिक स्वतंत्रता का संरक्षण;
- छः से चौदह वर्ष की आयु के बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा;
- कुछ दशाओं में गिरफ्तारी और निरोध से संरक्षण।

शोषण के विरुद्ध अधिकार

- मानव के दुर्व्यापार और बलात श्रम का प्रतिषेध;
- परिसंकटमय कार्यों में बालकों के नियोजन का प्रतिषेध।

धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार

- अंतःकरण की और धर्म के अबाध रूप से मानने, आचरण और प्रचार की स्वतंत्रता;
- धर्मिक कार्यों के प्रबंध की स्वतंत्रता;
- किसी विशिष्ट धर्म की अभिवृद्धि के लिए करों के संदाय के संबंध में स्वतंत्रता;
- राज्य निधि से पूर्णतः पोषित शिक्षा संस्थाओं में धर्मिक शिक्षा या धर्मिक उपासना में उपस्थित होने के संबंध में स्वतंत्रता।

संस्कृति और शिक्षा संबंधी अधिकार

- अल्पसंख्यक-वर्गों को अपनी भाषा, लिपि या संस्कृति विषयक हितों का संरक्षण;
- अल्पसंख्यक-वर्गों द्वारा अपनी शिक्षा संस्थाओं का स्थापन और प्रशासन।

सांविधानिक उपचारों का अधिकार

- उच्चतम न्यायालय एवं उच्च न्यायालय के निर्देश या आदेश या रिट द्वारा प्रदत्त अधिकारों को प्रवर्तित कराने का उपचार।

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह–

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों;

(च) हमारी सामाजिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणी–मात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सकें; और

(ट) यदि माता–पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।?

सात सामाजिक बुराइयाँ

1. सिद्धांत के बिना राजनीति
2. काम के बिना धन
3. विवेक के बिना सुख
4. चरित्र के बिना ज्ञान
5. नैतिकता के बिना व्यापार
6. मानवता के बिना विकास
7. त्याग के बिना पूजा

– राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी

नागरिक बोध

- सभी धर्मों का सम्मान करें।
- व्यक्तिगत स्वच्छता का ध्यान रखें।
- अपने घर और कार्य स्थल को हमेशा साफ रखें।
- सार्वजनिक स्थानों पर मल/मूत्र त्याग न करें।
- लावारिस पशुओं पर पत्थर न फेंकें।
- अपनी बारी की प्रतीक्षा करें और कतार का अनुसरण करें।
- कूड़ेदान/निर्दिष्ट स्थल पर ही कचरा फेंकें।
- यातायात नियमों का पालन करें।

गांधी जी का जंतर

तुम्हें एक जंतर देता हूँ। जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी अजमाओ :

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी हो सकता होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

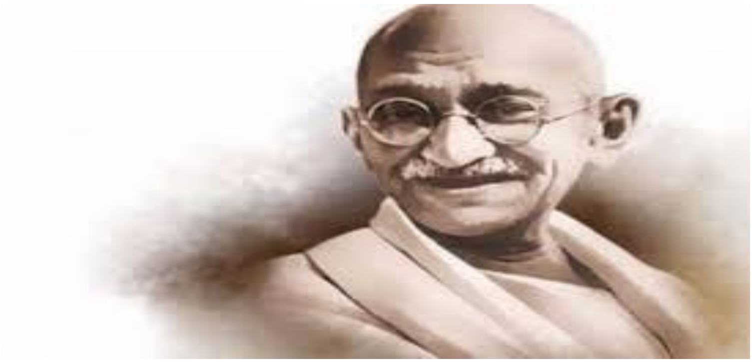

गांधी कथा वाचन

महात्मा गांधी का जीवन और उनकी कर्मयात्रा से पूरी दुनिया को अच्छा बनने की प्रेरणा मिलती है। अगर हम उनके विचारों का उपयोग अपने जीवन में करें, तो हम सबका भला ही होगा। इसके लिए यह जरूरी है कि गांधीजी के जीवन के किस्से लोगों को बचपन में ही पढ़ने के लिए मिलें। इस उम्र में सुनी और समझी बातें जीवन भर याद रहती हैं।

चंपारण सत्याग्रह की शताब्दी 2017–18 के अवसर पर बिहार के प्रारंभिक विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के लिए 'बापू की पाती' और कक्षा 9–12 के लिए 'एक था मोहन' पुस्तक प्रकाशित कर विद्यालयों को उपलब्ध कराई गई है। प्रधानाध्यापकों एवं शिक्षकों से अपेक्षा है कि रोज सुबह की सभा में इस पुस्तक के एक खंड का वाचन कराएँ। बच्चे इस किताब को खुद भी पढ़ें और महात्मा गांधी को जानें। हर संभव चेष्टा होनी चाहिए कि गांधीजी के सामाजिक प्रयोग, विचार और कर्मयात्रा का व्यावहारिक लाभ छात्रों को मिल पाये। इस दिशा में निम्न संसाधन सामग्री का भी उपयोग किया जा सकता है–

१. बापू की पाती
२. एक था मोहन
३. सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा : मोहनदास करमचंद गांधी
४. बहुरूप गांधी : अनु बंद्योपाध्याय

गांधीजी के अनमोल विचार

1. ऐसे जियो जैसे कि तुम कल ही मरने वाले हो। ऐसे सीखो जैसे कि तुम हमेशा जीने वाले हो।
2. कमजोर व्यक्ति कभी क्षमा नहीं कर सकता। क्षमा करना शक्तिशाली व्यक्ति का गुण है।
3. आपको वह परिवर्तन स्वयं बनना होगा जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं।
4. क्रोध और असहिष्णुता सही समझ के दुश्मन हैं।
5. मनुष्य को सोने से पहले अपना क्रोध भूल जाना चाहिए।
6. शक्ति शारीरिक क्षमता से नहीं आती। यह अदम्य इच्छाशक्ति से आती है।
7. एक विनम्र तरीके से, आप दुनिया को हिला सकते हैं।
8. साफ-सुथरा, स्वच्छ और सम्मानजनक जीवन जीने के लिए धन की आवश्यकता नहीं होती।
9. भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि हम वर्तमान में क्या करते हैं।
10. भीड़ में खड़ा होना आसान है, लेकिन अकेले खड़े होने के लिए साहस की आवश्यकता होती है।
11. मनुष्य के रूप में हमारी सबसे बड़ी क्षमता दुनिया को बदलना नहीं है, बल्कि खुद को बदलना है।
12. विनम्रता के बिना सेवा स्वार्थ और अहंकार है।
13. पाप से घृणा करो, पापी से प्रेम करो।
14. दुनिया में इंसान की जरूरतों के लिए पर्याप्तता है, लेकिन इंसान के लालच के लिए नहीं।
15. खुशी तब होती है जब तुम जो सोचते हो, जो कहते हो और जो करते हो, सबमें सामंजस्य हो।
16. यदि आप दुनिया को बदलना चाहते हैं, तो अपने आप से शुरुआत करें।
17. असली प्रेम उन लोगों से प्रेम करना है जो आपसे नफरत करते हैं, अपने पड़ोसी से प्रेम करना है भले ही आप उस पर अविश्वास करते हों।
18. किसी राष्ट्र की महानता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि वहां जानवरों के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है।
19. सरल जीवन जियें ताकि दूसरे भी सरल जीवन जी सकें।
20. किसी भी समाज का सही मापदंड यह है कि वह अपने सबसे कमजोर सदस्यों के साथ कैसा व्यवहार करता है।

वैष्णव जन तो तेने कहिये

वैष्णव जन तो तेने कहिये,
जे पीड़-पराई जाणे रे।
पर दुःखे उपकार करे तोये,
मन अभिमाण न आणे रे।

सकल लोकमां सहुने वंदे,
निंदा न करे केनी रे।
वाच काछ मन निश्छल राखे,
धन-धन जननी तेरी रे।
वैष्णव जन...

समदृष्टी ते तृष्णा त्यागी,
पर स्त्री जेने मात रे।
जिह्वा थकी असत्य न बोले,
पर धन नव झाले हाथ रे।
वैष्णव जन...

मोहे माया व्यापे नहिं जेने
दृढ़-वैराग्य जेना मनमां रे।
रामनामथुं ताळी लागी,
सकल तीरथ तेना तनमां रे।
वैष्णव जन...

वण लोभी ने कपट रहित छे,
काम-क्रोध निवार्या रे।
भणे नरसैया तेनुं दरसन करतां
कुळं एकोतेर तार्या रे।
वैष्णव जन...

तू ही राम है, तू रहीम है

तू ही राम है, तू रहीम है,
तू करीम कृष्ण खुदा हुआ।
तू ही वाहे गुरु तू यीशू मसीह,
हर नाम में तू समा रहा।
तू ही राम है...

तेरी आयत पाक कुरान में,
तेरा दर्श वेद पुराण में।
गुरु ग्रन्थजी के बखान में,
तू प्रकाश अपना दिखा रहा।
तू ही राम है...

अरदास है कहीं कीर्तन,
कहीं रामधुन कहीं आवहन।
विधि वेद का यह है सब रचन,
तेरा भक्त तुझको बुला रहा।
तू ही राम है...

तू ही ध्यान में, तू ही ज्ञान में,
तू ही प्राणियों के प्राण में।
कहीं आंसूओं में बहा तू ही,
कहीं फूल बन के खिला हुआ।
तू ही राम है...

तेरे गुण नहीं हम गा सकें,
तुझे कैसे मन में ला सकें।
है दुआ यही तुझे पा सकें,
तेरे दर पे सर ये झुका हुआ
तू ही राम है...

विधि वेश जात के भेद से,
हमें मुक्त कर दो परम पिता।
तुझे देख पायें सभी में हम,
तूझे ध्या सकें हम सभी जगह।

हर देश में तू

हर देश में तू, हर भेष में तू,
तेरा नाम अनेक तू एक ही है।
तेरी रंग भूमि यह विश्व धरा,
सब खेल में, मेल में, तू ही तो है।।
हर देश में तू, हर भेष में तू,
तेरा नाम अनेक तू एक ही है।
सागर से उठा बादल बन कर,
बादल से गिरा जल होकर के,
फिर नहर बना, नदियाँ गहरी,
तेरे भिन्न प्रकार तू एक ही है।।
हर देश में तू, हर भेष में तू,
तेरा नाम अनेक तू एक ही है।
मिट्टी से अणु परमाणु बना,
तूने दिव्य-जगत का रूप लिया।
कहीं पर्वत वृक्ष विशाल बना,
सौन्दर्य तेरा तू एक ही है।।
हर देश में तू, हर भेष में तू,
तेरा नाम अनेक तू एक ही है।
यह दिव्य दिखाया है जिसने,
वह है गुरूदेव की पूर्ण दया
तुकड़्या कहे कोई न और दिखा
बस मैं अरु तू सब एक ही है।
हर देश में तू, हर भेष में तू,
तेरा नाम अनेक तू एक ही है।

ए मालिक तेरे बन्दे हम

ए मालिक तेरे बन्दे हम,
ऐसे हो हमारे करम।
नेकी पर चले,
और बदी से डरे।
ताकि हँसते हुए निकले दम।
ए मालिक तेरे बन्दे हम...

ये अँधेरा घना छा रहा,
तेरा इंसान घबरा रहा।
हो रहा बेखबर,
कुछ न आता नजर।
सुख का सूरज छिपा जा रहा।
है तेरी रोशनी में जो दम,
अमावस को कर दे पूनम।।

नेकी पर चले,
और बदी से डरे।
ताकि हँसते हुए निकले दम।
ए मालिक तेरे बन्दे हम...

– भारत व्यास

इतनी शक्ति हमें देना दाता

इतनी शक्ति हमें देना दाता,
मन का विश्वास कमजोर हो ना,
हम चलें नेक रास्ते पर हमसे,
भूल कर भी कोई भूल हो ना,

इतनी शक्ति हमें देना दाता,
मन का विश्वास कमजोर हो ना...

दूर अज्ञान के हो अँधेरे,
तू हमें ज्ञान की रोशनी दे,
हर बुराई से बचते रहे हम,
जितनी भी दे भली जिन्दगी दे,
बैर हो ना किसी का किसी से,
भावना मन में बदले कि हो ना।

इतनी शक्ति हमें देना दाता,
मन का विश्वास कमजोर हो ना...

हम ना सोचें हमें क्या मिला है,
हम ये सोचें किया क्या है अर्पण,
फूल खुशियों के बाँटे सभी को,
सबका जीवन ही बन जाये मधुवन,
अपनी करूणा का जल तू बहा के,
करदे पावन हरेक मन का कोना।

इतनी शक्ति हमें देना दाता,
मन का विश्वास कमजोर हो ना...

हर तरफ जुल्म है बेबसी है,
सहमा-सहमा सा हर आदमी है,
पाप का बोझ बढ़ता ही जाये,
जाने कैसे ये धरती थमी है,
बोझ ममता से तू ये उठा ले,
तेरी रचना का अन्त हो ना,

इतनी शक्ति हमें देना दाता,
मन का विश्वास कमजोर हो ना,

हम अँधेरे में हैं रोशनी दे,
खो न दे खुद को ही दुश्मनी से
हम सजा पायें अपने किये की,
मौत भी हो तो सह लें खुशी से,
कल जो गुजरा है फिर से गुजरे,
आने वाला कल ऐसा हो ना,

इतनी शक्ति हमें देना दाता,
मन का विश्वास कमजोर हो ना,

– अभिलाष

हमको मन की शक्ति देना

हमको मन की शक्ति देना मन विजय करें,
दूसरों की जय से पहले खुद को जय करें।

भेदभाव अपने दिल में साफ कर सकें।
दूसरों से भूल हो तो माफ कर सकें।।
झूठ से बचे रहें, सच का दम भरें।
दूसरों की जय से पहले खुद को जय करें।

हमको मन की शक्ति देना मन विजय करें,
दूसरों की जय से पहले खुद को जय करें।

मुश्किल पड़े तो हम पर इतना करम कर।
साथ दें तो धर्म का, चलें तो धर्म पर।।
खुद पे हौसला रहे, बदी से डरे।
दूसरों की जय से पहले खुद को जय करें।।

हमको मन की शक्ति देना मन विजय करें,
दूसरों की जय से पहले खुद को जय करें।

वह शक्ति हमें दो दयानिधि

वह शक्ति हमें दो दयानिधि,
कर्तव्य मार्ग पर डट जावें।
पर सेवा पर उपकार में हम,
जग जीवन सफल बना जावें।

हम दीन-दुःखी निबलों-विकलों के,
सेवक बन संताप हरें।
जो हैं अटके भूले भटके,
उनको तारे खुद तर जावें।

छल-दंभ-द्वेष-पाखण्ड-झूठ,
अन्याय से नित दिन दूर रहें।
जीवन हो शुद्ध सरल अपना,
शुचि प्रेम सुधा रस बरसावें।

निज आन-मान मर्यादा का,
प्रभु ध्यान रहे अभिमान रहे।
जिस देश-जाति में जन्म लिया,
बलिदान उसी पर हो जावें।

वह शक्ति हमें दो दयानिधि,
कर्तव्य मार्ग पर डट जावें।
पर सेवा पर उपकार में हम,
जग जीवन सफल बना जावें।

दया कर दान

दया कर दान भक्ति का हमें परमात्मा देना,
दया करना हमारी आत्मा में शुद्धता देना।
हमारे ध्यान में आओ, प्रभु आँखों में बस जाओ।
अँधेरे दिल में आकर के, परम ज्योति जगा देना।
दया कर दान ...

हमारा कर्म हो सेवा, हमारा धर्म हो सेवा।
सदा ईमान हो सेवा, व सेवक चर बना देना।
दया कर दान ...

बहा दो प्रेम की गंगा दिलो में प्रेम का सागर।
हमें आपस में मिलजुल के प्रभो रहना सिखा देना।
वतन के वास्ते जीना वतन के वास्ते मरना
वतन पर जाँ फिदा करना, प्रभो हमको सिख देना।
दया कर दान ...

मिलता है सच्चा सुख केवल

मिलता है सच्चा सुख केवल
भगवान तुम्हारे चरणो में।
यह विनती है पल-पल छिन-छिन
रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।
मिलता है.....

चाहे काँटो पे मुझे चलना हो,
चाहे अग्नि में मुझे जलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणो में।
मिलता है.....

चाहे बैरी कुल संसार बने,
चाहे जीवन मुझ पर भार बने।
चाहे मौत गले का हार बने,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणो में।
मिलता है......

चाहे संकट ने मुझे घेरा हो,
चाहे चारों और अँधेरा हो।
पर चित्त ना डगमग मेरा हो,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणो में।
मिलता है.....

जिह्वा पर तेरा नाम रहे,
दिन रात सुबह और शाम रहे।
बस काम यह आठों याम रहे,
रहे ध्यान तुम्हारे चरणो में।
मिलता है....

दे दे मेरे अधरों को

दे दे मेरे अधरों को ज्ञान स्वर,
यही माँगते हम तुमसे वर।

निर्मल विचारों की वृष्टि दे,
व्यवहार विद्या की दृष्टि दे,
पहचान मैं अपने को लूँ,
मुझे ऐसी सूक्ष्म दृष्टि दे,
चलूँ सत्य न्याय के मार्ग पर,
यही माँगते हम तुमसे वर।

मरूस्थल में या मधुवन में हो,
मन किन्तु अनुशासन में हो,
प्रतिबिम्ब हर आदर्श का
इस छोटे से जीवन में हो,
स्वच्छ आचरण में ढले उमर,
यही माँगते हम तुमसे वर।

बने बाती जैसा ये तन मेरा,
हो तेल जैसा ये मन मेरा,
जलूँ और जग को प्रकाश दूँ,
दीये जैसा हो जीवन मेरा,
बलिदान की हो मेरी डगर,
यही माँगते हम तुमसे वर।

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्

ईश्वर सत्य है,
सत्य ही शिव है,
शिव ही सुन्दर है
जागो उठकर देखो,
जीवन ज्योत उजागर है
सत्यम् शिवम् सुन्दरम्,
सत्यम् शिवम् सुन्दरम्
सत्यम् शिवम् सुन्दरम्,
सुन्दरम्.............

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्,
सत्यम् शिवम् सुन्दरम्, (ईश्वर सत्य है)
सुन्दरम् (सत्य ही शिव है)
सुन्दरम् (शिव ही सुन्दर हैं)

सत्यम् शिवम् सुन्दरम्,
सत्यम् शिवम् सुन्दरम्
सत्यम् शिवम् सुन्दरम्

राम अवध में
राम अवध में, काशी में शिव,
कान्हा वृन्दावन में
दया करो प्रभु, देखूं इनको
दया करो प्रभु देखूं इनको,
हर घर के आंगन में
राधा मोहन शरणम्,
सत्यम् शिवम् सुन्दरम्
सत्यम् शिवम् सुन्दरम्

एक सूर्य है....
एक सूर्य है, एक गगन हैं,
एक ही धरती माता...
दया करो प्रभु, एक बनें सब
दया करो प्रभु, एक बने सब,
सबका एक से नाता
राधा मोहन शरणं,
सत्यम् शिवम् सुन्दरम्,
सत्यम् शिवम् सुन्दरम्,

ईश्वर सत्य है
सत्य ही शिव है
शिव ही सुन्दर है
सत्यम् शिवम् सुन्दरम्,
सत्यम् शिवम् सुन्दरम्।

गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गोदेवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ।।

–यजुर्वेद, अध्याय ३६, मंत्र ३

भावार्थ– उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतरात्मा में धारण करें। वह परमात्मा हमारी बुद्धि को संमार्ग की ओर प्रेरित करे।

विस्तारित अर्थ :
ओ३म्– जो सर्व रक्षक परमपिता परमात्मा है
भूः– जो सर्वजगत जीवन का आधार एवं स्वंयभू है
भुवः– जो दुःखों से रहित कल्याणकारी एवं सत्यस्वरूप है
स्वः– जो सर्वव्यापक होकर सबको धारण करता है
तत्– उस कल्याणकारी परमात्मा स्वरूप को हम सभी
सवितुः– जो सर्व जगत् का उत्पादक एवं ऐश्वर्य का दाता है
वरेण्यम्– जो वरणे योग्य है, सर्वश्रेष्ठ है
भर्गो– जो विशुद्ध विज्ञान स्वरूप पवित्र करने वाला, ब्रह्मस्वरूप है
देवस्य– जो देवों के वरने योग्य है, जिसकी प्राप्ति की हम कामना करते है
धीमहि– जिसका सभी धारण करें, सभी प्रयोजन के लिए
धियो– जो हमारी बुद्धियों को
यो नः– जो सविता देव परमात्मा हमारी
प्रचोदयात्– शुभ कार्यों में प्रेरित करे, श्रेष्ठ मार्ग अपनाएं।

विविध धर्मों में गायत्री मंत्र का भाव

1. **इस्लाम–** "लाइला–ह–इल्लल्लाह" अर्थात् हे अल्लाह! हम तेरी ही वन्दना करते है, तथा तुम्हीं से सहायता चाहते हैं। हमें सीधा मार्ग दिखा। उनलोगों का मार्ग, जो तेरे कृपापात्र बनें, न कि उनका जो तेरे कोप भाजन बनें तथा पथभ्रष्ट हुए। (कुरान सूरा अल फातिहा)
2. **ईसाई–** हे पिता! हमें परीक्षा में न डाल, परन्तु बुराई से बचा; क्योंकि राज्य, पराक्रम तथा महिमा सदा तेरी ही है। (नया नियम, मती)
3. **यहूदी–** हे जेहोवा (परमेश्वर) अपने धर्म के मार्ग में मेरा पथ-प्रदर्शन कर मेरे आगे अपने सीधे मार्ग को दिखा। (पुराना नियम)
4. **सिख–** "एक ओंकार सतिनामु करता, पुरूखु निरभऊ निरवैरू। अकाल मूरति अजूनी, सैभं गुरू प्रसादि।" –ग्रन्थ साहिब
   " ओंकार (ईश्वर) एक है। उसका नाम सत्य है। वह सृष्टिकर्ता, समर्थ पुरूष है, निर्भय, निर्वैर, जन्मरहित तथा स्वयंभू है। वह गुरू की कृपा से जाना जाता है।
5. **बौद्ध–** "बुद्धं शरणं गच्छामि। धम्मं शरणं गच्छामि। संघ शरणं गच्छामि।" अर्थात् "मैं बुद्ध की शरण में जाता हुँ, मैं धर्म की शरण में जाता हुँ, मैं संघ की शरण में जाता हुँ।"
6. **जैन–** "अर्हेन्ताओं को नमस्कार, सिद्धों को नमस्कार, आचार्यों को नमस्कार, उपाध्यायों को नमस्कार तथा सब साधुओं को नमस्कार।"
7. **पारसी–** वह परमगुरू (अहूरमन्द-परमेश्वर) अपने ऋत तथा सत्य के भण्डार के कारण राजा के समान महान है। ईश्वर के नाम पर किये गये परोपकारों से मनुष्य प्रभू-प्रेम का पात्र बनता है। (अवेस्ता)
8. **शिंतो–** हे परमेश्वर! हमारे नेत्र भले ही अभद्र वस्तु देखे, परन्तु हमारे हृदय में अभद्र भाव उत्पन्न न हो। हमारे कान चाहे अपवित्र बात सुने, तो भी हमारे हृदय में अभद्र बातों का अनुभव न हो।
9. **कन्फ्यूशस–** दूसरो के प्रति वैसा व्यवहार न करो, जैसा की तुम उनसे अपने प्रति नहीं चाहते हो।

गुरुस्तोत्रम्

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुस्साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥१॥

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः॥२॥

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरं।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥३॥

अनेकजन्मसंप्राप्त कर्मबन्धविदाहिने
आत्मज्ञानप्रदानेन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥४॥

मन्नाथः श्रीजगन्नाथो मद्गुरुः श्रीजगद्गुरुः।
ममात्मासर्वभूतात्मा तस्मै श्री गुरवे नमः॥५॥

गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काको लागूँ पाँय।
बलिहारी गुरू आपनों, गोविन्द दियो बताए।।
To whom to bow, to God or teacher?
To him who explained God’s feature.

मातृ देवो भवः।
पितृ देवो भवः।
आचार्यदेवो भवः।
अतिथि देवो भवः।

–तैतरीयारण्यक

अर्थात् माता, पिता, आचार्य और अतिथि देव तुल्य होते हैं। इनकी सेवा करना ही देव पूजा कहलाती है।

यह तन विष की बेलरी, गुरू अमृत की खान।
शीश दिये जो गुरू मिले तो भी सस्ता जान।।

This body a domain of vices, the teacher of virtues. Get a teacherin exchange for life, if told to choose.

गुरू कुम्हार शिष कुंभ है, गाढ़ि-गाढ़ि काढे खोट।
अंतर हाथ पसारिए, बाहर-बाहर चोट।।

यदि गुरू को कभी शिष्य को डाँटना भी पड़े तो अवश्य डाँटे, किन्तु उसके संस्कार सुधार के लिए। ऐसा सद्गुरू सौभाग्य से प्राप्त होता है।

गुरू को ऐसा चाहिए, शिष सों कछु न लेय।
शिष तो ऐसा चाहिए, गुरू को सब कुछ देय।।

गुरू को निष्काम, निर्लोभी और संतोषी होना चाहिए। उसे शिष्य से कभी भी कुछ लेने की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। क्योंकि जहाँ गुरू लोभी और शिष्य से कुछ लेने की कामना करता है वहाँ गुरूत्व की गरिमा घट जाती है परन्तु शिष्य को ऐसा होना चाहिए कि वह गुरू को अपना सबकुछ अर्पण कर दे तभी उसे ज्ञान की प्राप्ति होगी।

पंडित पढ़ि गुनि पचि मुये, गुरू बिन मिले न ज्ञान।
ज्ञान बिना नहीं मुक्ति है, सत सब्द पर मान।।

बहुत पंडित-विद्वान पढ़ते-सुनते यूँ ही थक कर मर जाते हैं किन्तु कोई लाभ नहीं होता, क्योंकि बिना गुरू के ज्ञान नहीं मिलता। जब तक ज्ञान नहीं होगा तब तक सांसारिक बंधनों से मुक्ति नहीं मिल सकती।

आचार्यदेवो भवः। (आचार्य देव तुल्य होते हैं।) - तैत्तिरीयोपनिषद्

आचार्यो ब्रह्मणों मूर्तिः। (आचार्य ब्रह्म की मूर्ति है।) - मनुस्मृति

गुरू बिन ज्ञान न उपजै, गुरू बिन मिलै न मोक्ष।
गुरू बिन लखै न सत्य को, गुरू बिन मिटे न दोष।।

गुरू समान दाता नहीं, याचक शीष समान।
तीन लोक की सम्पदा, सो गुरू दिन्हीं दान।।

परमस्तुति

असतो मा सद्गमय
तमसो मा ज्योर्तिगमय
मृत्यो मा अमृतगमय।।

– शतपथ ब्राह्मण

हे परमगुरू परमात्मा! आप मुझे असत्य मार्ग से पृथक कर सन्मार्ग की ओर ले चलिये। अज्ञानता रूपी अंधकार से विद्या रूपी प्रकाश को प्राप्त कीजिये और मृत्यु से पृथक करके आनंदरूपी अमरत्व को प्राप्त कीजिये।

लोक कल्याण के लिए प्रार्थना

लोका समस्ता सुखिनोभवन्तिः सर्वेजनाः सुखिनो भवन्तु।
ओ३म् सर्वेशां स्वस्तिर्भवतु, सर्वेशा शान्ति भवतु।
सर्वेशा पूर्णम् भवतु सर्वेशां मंगलम् भवतु।
सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भाग भवेत्।

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।
यद भद्रं तन्न आसुव।।

–ऋग्वेद

भावार्थ– हे जगत् के सृष्टिकर्ता देव! समस्त बुराईयों को हमसे दूर करो और जो शुभ है उसे हममें उत्पन्न करो।

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि, वीर्यमसि वीर्यमहि धेहि।
बलमसि बलं मयि धेहि, ओजोऽस्योजो मयि धेहि।
मन्युरसि मन्यु मयि धेहि, सहोऽसि सहो मयि धेहि।

–यजुर्वेद अ० १६/ मंडल ६

भावार्थ– हे ईश्वर! आप प्रकाश स्वरूप हैं कृपाकर मुझमें भी तेज स्थापित कीजिये। आप अन्नत पराक्रम युक्त हैं इसलिये मुझमें भी पराक्रम स्थापित कीजिये। आप बलशाली हैं अतः मुझे भी बल प्रदान कीजिये। आप अनन्त सामर्थ्ययुक्त हैं अतः मुझे भी वैसा ही कीजिये। आप दुष्ट काम और दुष्टों पर क्रोधकारी हैं, मुझको भी वैसा ही कीजिये। आप निन्दा स्तुति और स्व-अपराधियों को सहन करने वाले हैं कृपा से मुझको भी वैसा ही कीजिये।

ॐ सहनावातु। सह नौ भुनक्तु। सहवीर्यकर वा वहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु। मा विद्विशावहै।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

भावार्थ– गुरू और शिष्य दोनों मिलकर प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु! आप हमारी रक्षा करें। हमारी भरण-पोषण करें। हमें हर कार्य को पूर्ण सामर्थ्य के साथ करने कि क्षमता प्रदान करें। ताकि हम उस दान रूपी प्रकाश को प्राप्त कर सके और हमारे मन में एक दूसरों के प्रति द्वेषभाव न आये।

विश्व शान्ति मंत्र

ॐ द्यौ शान्तिरन्तरिक्षऽ शान्ति
पृथिवी शान्तिरोषधायः शान्तिर्वनस्पतयः शान्ति
विर्श्वेदेवाः शान्ति ब्रह्मं शान्ति सर्वऽ शान्तिः
शान्तिरेव शान्ति सा मा शान्तिरेधि।

भावार्थ– आकाश शान्तिमय हो, अन्तरिक्ष शान्तिमय हो, पृथ्वी शान्तिमय हो, जल शान्तिमय हो, औषधियाँ, शान्तिमय हो, वनस्पति शान्तिमय हो, विश्वदेव शान्तिमय हो, ब्रह्म शान्तिमय हो, सबकुछ शान्तिमय हो, शान्ति ही शान्तिमय हो, वह शान्ति मुझे प्राप्त हो। सर्वत्र शान्ति ही शान्ति रहे।

सरस्वती स्तुति

शुक्लां ब्रह्मविचारसार परमा, माद्यांजगद्व्यापिनीं।
वीणापुस्तक धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं, पद्मासने संस्थिता।
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं, बुद्धिप्रदां शारदाम्।

भावार्थः- शुक्लवर्ण वाली, संपूर्ण चराचर जगत् में व्याप्त, आदिशक्ति, परब्रह्म के विषय में किये गए विचार एवं चिंतन के सार के रूप में परम उत्कर्ष को धारण करने वाली, सभी भयों से भयदान देने वाली, अज्ञान के अंधेरे को मिटाने वाली, हाथों में वीणा, पुस्तक और स्फटिक की माला धारण करने वाली और पद्मासन पर विराजमान बुद्धि प्रदान करने वाली, सर्वोच्च ऐश्वर्य से अलंकृत, भगवती शारदा (सरस्वती देवी) की मैं वंदना करता हूँ।

या कुन्देन्दु तुषारहार धवला, या शुभ्र वस्त्रावृता।
या वीणा वरदण्ड मण्डित करा, या श्वेत पद्मासना।
या ब्रह्माच्युत शंकर प्रभृतिभि, देवैः सदा वन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती, निःशेष जाड्यापहा।

भावार्थः- जो विद्या की देवी भगवती सरस्वती कुन्द के फूल, चन्द्रमा, हिमराशि और मोती के हार की तरह धवल वर्ण की है और जो श्वेत (सफेद) वस्त्र धारण करती हैं, जिनके हाथ में वीणा-दण्ड शोभायमान है, जिन्होंने श्वेत कमल पर आसन ग्रहण किया है तथा ब्रह्मा, विष्णु एवं शंकर आदि देवताओं द्वारा जो सदा पूजित हैं, वही संपूर्ण जड़ता और अज्ञान को दूर कर देने वाली मां सरस्वती हमारी रक्षा करें।

हंसवाहिनी की - जय
विद्यादायिनी की - जय
ज्ञानदायिनी की - जय
वीणापाणि की - जय
माँ शारदे की - जय

वर दे वीणावादिनी

वर दे! वीणावादिनी वर दे!
प्रिय स्वतंत्र रव अमृत मंत्र नव
भारत में भर दे,
वर दे! वीणावादिनी वर दे!

काट अंध उर के बंधन स्तर
बहा जननी ज्योतिर्मय निर्झर
कलुश भेदतम हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे,
वर दे! वीणावादिनी वर दे!

नवगति नव लय ताल छंद नव
नवलकंठ नव जलद मंत्र नव
नव नभ के नव विहग वृंद को
नव पर नव स्वर दे,
वर दे! वीणावादिनी वर दे!

– सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

जय जय हे भगवती सुर भारती

जय जय हे भगवती सुर भारती,
तव चरणौ प्रणमामः।
नाद ब्रह्ममयी हे वागेश्वरी,
शरणम् ते गच्छामः।

त्वमीसी शरण्या त्रिभुवन धन्या,
सुरमुनि वंदिता चरणा।
नव रस मधुरा कविता मुखरा,
स्मित रूचि रूचिरा भरणा।

आसिना भव मानस हंसे,
कुंद तुहिन शशि धवले।
हर जड़तां कुरू बोधि विकासं,
सिद्ध पंकज तनु विमले।

ललित कलामयी ज्ञान विभामयी,
वीणा पुस्तक धारिणी।
मतिरास्तम नव तव पद कमले,
अयि कुंठा विषहारिणी।

जय जय हे भगवती सुर भारती,
तव चरणौ प्रणमामः।

सरस्वती वन्दना

माँ सरस्वती तेरे चरणों में,
हम शीश झुकाने आयें है।
दर्शन की भिक्षा लेने को,
दो नयन कटोरे लाए हैं।।

अज्ञान अंधेरा दूर करो और,
ज्ञान का दीप जला देना।
हम ज्ञान की शिक्षा लेने को,
माँ द्वार तिहारे आए हैं।।

हम अज्ञानी बालक तेरे,
अज्ञान दोष को दूर करो।
बहती सरिता विद्या की,
हम उसमें नहाने आए हैं।।

हम साँझ सवेरे गुण गाते,
माँ भक्ति की ज्योति जला देना।।
क्या भेंट करु उपहार नहीं,
हम हाथ पसारे आए हैं।।

माँ सरस्वती तेरे चरणों में,
हम शीश झुकाने आयें है।
दर्शन की भिक्षा लेने को,
दो नयन कटोरे लाए हैं।।

अम्ब विमल मति दे

हे हंसवाहिनी ज्ञान दायिनी,
अम्ब विमल मति दे।

जग सिरमौर बनाये भारत,
वह बल विक्रम दे।
हे हंसवाहिनी ज्ञान दायिनी
अम्ब विमल मति दे।

साहस शील हृदय में भर दे,
जीवन त्याग तपोमय कर दे,
संयम सत्य स्नेह का वर दे,
स्वाभिमान भर दे।
हे हंसवाहिनी ज्ञान दायिनी,
अम्ब विमल मति दे।

लवकुश, ध्रुव प्रहलाद बने हम,
मानवता का त्राश हरें हम,
सीता, सावित्री दुर्गा माँ,
फिर घर-घर भर दे।
हे हंसवाहिनी ज्ञान दायिनी,
अम्ब विमल मति दे।

लिये कर कंज में वीणा

लिये कर कंज में वीणा, सुभाषी तुम सुहाती हो।
विराजो इस हृदय में माँ, मुझे क्यूँ भूल जाती हो।।

तुम्हीं हो वेद की माता,
तुम्हीं हो ज्ञान की दाता,
अकिंचन जान कर मुझको,
न अपना क्यूँ बनाती हो?

लिये कर कंज में वीणा, सुभाषी तुम सुहाती हो।
विराजो इस हृदय में माँ, मुझे क्यूँ भूल जाती हो।।

पथिक मैं भ्रान्त आकुल सा,
व्यथित अंजान हूँ शिशु सा,
मुझे सद्ज्ञान की लोरी,
न तुम अब आ सुनाती हो,

लिये कर कंज में वीणा, सुभाषी तुम सुहाती हो।
विराजो इस हृदय में माँ, मुझे क्यूँ भूल जाती हो।।

अभय वर दायिनी तुम हो,
सकल दुःखहारिनी तुम हो,
वरद कर रख न सर पर क्यूँ,
मुझे तुम आ सुलाती हो,

लिये कर कंज में वीणा, सुभाषी तुम सुहाती हो।
विराजो इस हृदय में माँ, मुझे क्यूँ भूल जाती हो।।

❀ माँ शारदे कहाँ तू ❀

माँ शारदे कहाँ तू, वीणा बजा रही हो,
किस मंजु ज्ञान से तू, जग को लुभा रही हो।

किस भाव में भवानी तू, मग्न हो रही है,
विनती नहीं हमारी, क्यों माँ तू सुन रही है।

हम दीन बाल कब से विनती सुना रहे हैं,
चरणों में तेरे माता, हम शीश झुका रहें हैं।

अज्ञान तुम हमारा, माँ शीघ्र दूर कर दो,
द्रुत ज्ञान शुभ्र हममें, माँ शारदे तू भर दो।

बालक सभी जगत के, सुत मात हैं तुम्हारे,
प्राणों से प्रिय हैं हम, तेरे पुत्र सब दुलारे।

हमको दयामयी तू, ले गोद में पढ़ाओ,
अमृत जगत का हमको, माँ शारदे पिलाओ।

मातेश्वरी तू सुन ले, सुंदर विनय हमारी,
करके दया तू हर ले, बाधा जगत की सारी।

हे प्रभु ! आनंददाता

हे प्रभु ! आनंददाता!! ज्ञान हमको दीजिये।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिये।।

लीजिये हमको शरण में हम सदाचारी बनें।
ब्रह्मचारी, धर्मरक्षक, वीर व्रतधारी बनें। हे प्रभु !....

निंदा किसी की हम किसी से भूल कर भी ना करें।
ईर्ष्या कभी भी हम किसी से भूल कर भी ना करें। हे प्रभु !...

सत्य बोलें झूठ त्यागें मेल आपस में करें।
दिव्य जीवन हो हमारा यश तेरा गाया करें। हे प्रभु !....

जाये हमारी आयु हे प्रभु! लोक के उपकार में।
हाथ डालें हम कभी न भूलकर अपकार में। हे प्रभु !....

योगविद्या, ब्रह्मविद्या हो अधिक प्यारी हमें।
ब्रह्मनिष्ठा प्राप्त करके सर्वहितकारी बनें। हे प्रभु !....

तुम्हीं हो माता

तुम्हीं हो माता पिता तुम्हीं हो,
तुम्हीं हो बन्धु सखा तुम्हीं हो।
तुम्हीं हो साथी तुम्हीं सहारे,
कोई न अपना सिवा तुम्हारे।

तुम्हीं हो नैया तुम्हीं खेवैया,
तुम्हीं हो बन्धु सखा तुम्हीं हो।

जो खिल सके हैं वो फूल हम हैं,
तुम्हारे चरणों की धूल हम हैं।
दया की दृष्टि सदा ही रखना,
तुम्हीं हो बन्धु सखा तुम्हीं हो।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या च द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम् देव देव।।

भावार्थ- तुम्हीं माता और तुम्हीं पिता हो, तुम्हीं भाई और तुम्हीं मित्र हो। तुम्हीं विद्या और तुम्हीं धन हो। हे देव! तुम्हीं मेरे सब कुछ हो।

सुबह सवेरे लेकर तेरा नाम

सुबह सवेरे लेकर तेरा नाम प्रभु × २
करते हैं हम शुरू आज का काम प्रभु × २

शुद्ध भाव से तेरा ध्यान लगाये हम
विद्या का वरदान तुम्हीं से पाये हम × २
हाँ विद्या का वरदान तुम्हीं से पाये हम
तुम्हीं से है आगाज तुम्हीं अंजाम प्रभु
करते हैं हम शुरू आज का काम प्रभु
सुबह सवेरे लेकर तेरा नाम प्रभु × २
करते हैं हम शुरू आज का काम प्रभु × २

गुरूओं का सत्कार कभी ना भूलें हम
इतना बनें महान गगन को छू लें हम × २
हाँ इतना बने महान गगन को छू लें हम
तुम्हीं से है हर सुबह तुम्हीं से शाम प्रभु
करते हैं हम शुरू आज का काम प्रभु
सुबह सवेरे लेकर तेरा नाम प्रभु × २
करते हैं हम शुरू आज का काम प्रभु × २

लब पे आती है दुआ बनके

लब पे आती है दुआ बनके तमन्ना मेरी।
जिन्दगी शम्मा की सूरत हो खुदाया मेरी ।।

लब पे आती है दुआ बनके तमन्ना मेरी।

हो मेरे दम से यूँही मेरे वतन की जीनत ।
जिस तरह फूल से होती है चमन की जीनत ।।

जिन्दगी हो मेरी परवाने की सूरत या रब।
इल्म की शम्मा से हो मुझको मोहब्बत या रब ।।

हो मेरा काम गरीबों की हिमायत करना।
दर्द मंदो से जईफों से मोहब्बत करना ।।

मेरे अल्लाह बुराई से बचाना मुझको।
नेक जो राह हो उस रह पे चलाना मुझको ।।

मेरे अल्लाह बुराई से बचाना मुझको।
नेक जो राह हो उस रह पे चलाना मुझको ।।

रचयिता : डा. अल्लामा इकबाल

अभियान गीत- धीरे-धीरे यहाँ का

धीरे-धीरे यहाँ का, मौसम बदलने लगा है,
वातावरण सो रहा था, अब आँख मलने लगा है,
पिछले सफर की ना पुछो, टूटा हुआ एक रथ है,
जो रूक गया था यहीं पर, अब साथ चलने लगा है,
धीरे-धीरे...

हमको पता भी नहीं था, वो आग ठंडी पड़ी है,
उस आग में आज पानी सहसा उबलने लगा है,
धीरे-धीरे...

जो आदमी मर चुके हैं, मौजूद हैं इस सभा में,
हर सच कल्पना से, आगे निकलने लगा है,
धीरे-धीरे...

अभियान गीत–हम लोग है ऐसे दिवाने

हम लोग है ऐसे दिवाने, दुनिया को बदल कर मानेंगे,
मंजिल को पाने आये हैं, मंजिल को पाकर मानेंगे।

हर माँग हमारी पूरी हो, उस वक्त तसल्ली पायेंगे,
ऐसे तो नहीं ढ़लने वाले, हम लड़ते ही मर जायेंगे,
हाँ, हम भी किसी से कम तो नहीं, तूफान उठाकर मानेंगे।
मंजिल को पाने...

सच्चाई की खातिर दुनिया में, बापू ने भी गोली खाई थी,
ईसा भी चढ़े थे सूली पर, सुकरात जान गँवाई थी,
यूँ हम भी किसी से कम तो नहीं, तकदीर बदल कर मानेंगे,
मंजिल को पाने...

दो दिन की बहारें हैं जग में, जब जुल्म किसी का चलता है,
हर जुल्म का सूरज लाख उगे, हर शाम को लेकिन ढलता है,
नफरत के शोले हैं दिल में, हम उन्हें बुझा कर मानेंगे,
मंजिल को पाने...

अभियान गीत –घर घर में अलख जगायेंगे

घर-घर में अलख जगायेंगे हम बदलेंगे जमाना,
घर-घर में अलख जगायेंगे हम बदलेंगे जमाना।

निश्चय हमारा ध्रुव सा अटल है,
काया की रग-रग में निष्ठा का बल है,
जागृति शंख बजाएँगें हम बदलेंगे जमाना,
घर-घर में अलख जगायेंगे हम बदलेंगे जमाना।

बदली है हमने अपनी दिशाएँ,
मंजिल नई तय करके दिखायें,
धरती को स्वर्ग बनायेंगे हम बदलेंगे जमाना,
घर-घर में अलख जगायेंगे हम बदलेंगे जमाना।

श्रम से बनायेंगे मिट्टी को सोना,
जीवन बनेगा उपवन सलोना,
मंगल सुमन खिलायेंगे हम बदलेंगें जमाना,
घर-घर में अलख जगायेंगे हम बदलेंगे जमाना।

कोरी कल्पना की तोड़ेंगें कारा,
ममता की निर्मल बहायेंगे धारा,
समता का दीप जलायेंगे हम बदलेंगे जमाना,
घर-घर में अलख जगायेंगे हम बदलेंगे जमाना।

अभियान गीत- ले मशालें चल पड़े हैं

ले मशालें चल पड़े हैं, लोग मेरे गाँव के।
अब अँधेरा जीत लेंगें, लोग मेरे गाँव के।

पूछती है झोपड़ी और, पूछते हैं खेत भी।
कब तलक लूटते रहेंगें, लोग मेरे गाँव के।
ले मशालें चल पड़े हैं.....

नया सूरज अब उगेगा, देश के हर गाँव में,
अब इकट्ठे हो चले हैं, लोग मेरे गाँव के।
ले मशालें चल पड़े हैं.....

चीखती है हर रूकावट, ठोकरों की मार से।
बेड़ियाँ खनका रहे हैं, लोग मेरे गाँव के।
ले मशालें चल पड़े हैं....

देखों यारों जो सुबह लगती है फीकी आज तक।
नया रंग उसमें भरेंगे, लोग मेरे गाँव के।
ले मशालें चल पड़े हैं....

ज्ञान का दीपक जलेगा, देश के हर गाँव में।
रौशनी फैला रहे हैं, लोग मेरे गाँव के।
ले मशालें चल पड़े हैं....

बिना पढ़े कुछ भी यहाँ, मिलता नहीं यह जानकर।
अब पढ़ाई कर रहे हैं, लोग मेरे गाँव के।
ले मशालें चल पड़े हैं...

– बल्ली सिंह चीमा

अभियान गीत- लहू का रंग एक

लहू का रंग एक है, अमीर क्या? गरीब क्या?
बने हैं एक खाक से तो दूर क्या? करीब क्या?

वही है तन, वही है जान, कब तलक छुपााओगे?
पहन कर रेशमी लिबास तुम बदल न जाओगे।
सभी है एक जाति हम, सवर्ण क्या? अवर्ण क्या?
बने हैं एक खाक से तो दूर क्या? करीब क्या?

गरीब हैं वो इसलिए कि तुम अमीर हो गए।
एक बादशाह हुआ तो सौ फकीर हो गए।
खता है सब समाज की, भले-बुरे नसीब क्या?
बने हैं एक खाक से तो दूर क्या? करीब क्या?

ज्यों एक हैं तो क्यों न फिर दिलों का दर्द बाँट लें?
जिगर का प्यार बाँट ले, लबों की प्यास बाँट लें।
लगा लो सबको तुम गले, हबीब क्या? रकीब क्या?
बने हैं एक खाक से तो दूर क्या? करीब क्या?

कोई जने हैं मर्द तो कोई जनी हैं औरतें।
शरीर में भले हो फर्क, रूह सबकी एक है।
एक हैं जो हम सभी विषमता की लकीर क्या?
बने हैं एक खाक से तो दूर क्या? करीब क्या?

लहू का रंग एक है, अमीर क्या? गरीब क्या?
बने हैं एक खाक से तो दूर क्या? करीब क्या?

अभियान गीत- तकदीर बदल देंगें

भारत के नन्हे-मुन्नों की तकदीर बदल देंगें!
हम शिक्षक हैं बच्चों की तस्वीर बदल देंगें!!

हम ही विश्वकर्मा बने और हम ही गुरू वशिष्ठ
हम ही गार्गी अनुसूइया बने और हम ही बने चाणक्य।
हम भी किसी से कम तो नहीं, इतिहास बदल देंगे।
भारत के नन्हे-मुन्नों की तकदीर बदल देंगें!!

गुरू की महिमा सबसे ऊँची, नर हो चाहे नारायण।
यही सिखाते गुरू-ग्रंथ, बाइबल, कुरान और रामायण।
जला ज्ञान का दीप, अँधेरी रात बदल देंगें।
भारत के नन्हे-मुन्नों की तकदीर बदल देंगें!!

हमसे जीवित लोकतंत्र और हमसे जीवित ाान है।
हमको ही रचना होगा, अब शिक्षित हिन्दुस्तान है।
मीठा कर देंगें सागर को, नीर बदल देंगें।
भारत के नन्हे-मुन्नों की तकदीर बदल देंगें!!

देख रही है भारत माता, आशा भरी निगाहों से।
भटक रहा है भोला बचपन, अंधकार की राहों से।
प्रण लेते हम हर हाथ की, हम लकीर बदल देंगें
भारत के नन्हे-मुन्नों की तकदीर बदल देंगें!!

अभियान गीत- पढ़ना लिखना सीखो

पढ़ना-लिखना सीखो, ओ मेहनत करने वालों
पढ़ना-लिखना सीखो, पढ़ना-लिखना सीखो।

क, ख,ग, घ, को पहचानों, अलिफ को पढ़ना सीखो
अ, आ, इ, ई को हथियार बनाकर लड़ना सीखो

ओ बकरी चराने वालों, ओ सुअर चराने वालों
पढ़ना-लिखना सीखो, पढ़ना-लिखना सीखो।

पढो, अगर इस देश अपने ढंग से चलवाना है
पढ़ों कि हर मेहनतकश को उसका हक दिलवाना है।

ओ सड़क बनाने वालों, ओ बोझा ढोने वालों
पढ़ना-लिखना सीखो, पढ़ना-लिखना सीखो।

पूछो, मजदूरी की खातिर लोग भटकते क्यों है?
पढ़ो, तुम्हारी सूखी रोटी गिद्ध क्यों लपकते हैं?

ओ घोंघा चुनने वालों, ओ कागज चुनने वालों
पढ़ना-लिखना सीखो, पढ़ना-लिखना सीखो।

पूछो, माँ बहनों पर यो बदमाश झपटते क्यों हैं?
कहो तुम्हारी मेहनत का फल सेठ गटकते क्यों हैं?

ओ हल चलाने वालों, ओ भैंस चराने वालों
पढ़ना-लिखना सीखो, पढ़ना-लिखना सीखो।

पढ़ो, लिखा है दीवारों पर मेहनतकश का नारा
पढो कायदे, राहत बन जाएगा बोझ तुम्हारा।

पढो अंध विश्वासों से गर हो पाना छुटकारा
पढ़ो किताबे, कहती है सारा संसार तुम्हारा।

ओ शीशी चुनने वालों, ओ लोहा चुनने वालों
पढ़ना-लिखना सीखो, पढ़ना-लिखना सीखो।

अभियान गीत-चल रे साथी

चल रे साथी चल, चल पढ़ने को चल
छू लेंगे हम आसमान को आज नही तो कल...
चल रे साथी... × २

चौड़ी देखो छाती अपनी लम्बी-लम्बी बाँहें
हम छोड़ेंगे पैदा करके तूफानों में राहें
समग्र शिक्षा के वीर सिपाही कदम बढ़ाता चल...
चल रे साथी... × २

हम तो हैं आजाद भगत सिंह दीवाने मतवाले
अरे आजादी की जंग में हम कभी न हटने वाले
जल जायेंगे आग में या फिर बर्फों में पिघल...
चल रे साथी... × २

अब न रहेगा कोई निरक्षर कोई भूखा नंगा
इस धरा पर बह जायेगी ज्ञान की निर्मल गंगा
सुन झरने की गीत मनोहर नदियों की कलकल...
चल रे साथी... × २

शक्तिशाली देश बनेगा ऐसा ताकतवाला
खुला रहेगा द्वार-द्वार और नहीं लगेगा ताला
बन जायेगी झोपड़ी तेरी सुंदर एक महल...
चल रे साथी... × २

फैलायेंगे भाईचारा नहीं एकता तोड़ेंगे।
टूट गया है जो दिल सारा फिर से उसको जोडेंगे
समग्र शिक्षा के वीर सिपाही कदम बढ़ाता चल...
चल रे साथी... × २

हम होंगे कामयाब...

हम होंगे कामयाब, हम होगें कामयाब,
हम होगें कामयाब एक दिन,
हो हो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास,
हम होंगें कामयाब एक दिन।।

हम चलेंगें साथ-साथ, डाल हाथों में हाथ,
हम चलेंगे साथ-साथ एक दिन,
हो हो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास,
हम चलेंगे साथ-साथ एक दिन।।

नहीं डर किसी का आज, नहीं डर किसी का आज,
नहीं डर किसी का आज के दिन,
हो हो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास,
नहीं डर किसी का आज के दिन।।

होगी शान्ति चारों ओर, होगी शान्ति चारों ओर,
होगी शान्ति चारों ओर एक दिन,
हो हो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास,
होगी शान्ति चारों ओर एक दिन।।

होगी शिक्षा सबके पास, होगी शिक्षा सबके पास,
होगी शिक्षा सबके पास एक दिन
हो हो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास,
होगी शिक्षा सबके पास एक दिन।।

हम होंगे कामयाब, हम होगें कामयाब,
हम होगें कामयाब एक दिन,
हो हो मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास,
हम होंगें कामयाब एक दिन।।

- गिरिजा कुमार माथुर

हम होंगे कामयाब... (English Version)

We shall overcome,
we shall overcome,
we shall overcome someday,
oh' deep in my heart, I do believe,
that we shall overcome someday

we shall walk hand in hand,
we shall walk hand in hand,
we shall walk hand in hand some day
oh' deep in my heart, I do believe,
that we'll walk hand in hand someday

we're not afraid,
we're not afraid,
we're not afraid someday,
oh' deep in my heart, I do believe,
that we're not afraid someday,

we shall live in peace,
we shall live in peace,
we shall live in peace someday,
oh' deep in my heart, I do believe,
that we'll live in peace someday,

truth shall come to us,
truth shall come to us
truth shall come to us someday,
oh' deep in my heart, I do believe,
that truth shall come to us someday,

we shall integrate,
we shall integrate,
we shall integrate someday,
oh' deep in my heart, I do believe,
that we shall integrate someday.

हिन्द देश का प्यारा झंडा

हिन्द देश का प्यारा झंडा ऊँचा सदा रहेगा,
तूफान और बादलों से भी नहीं झुकेगा,
नहीं झुकेगा, नहीं झुकेगा, झंडा नहीं झुकेगा।
हिन्द देश का प्यारा....

केसरिया बल भरने वाला, सादा है सच्चाई,
हरा रंग है हरी हमारी, धरती की अँगड़ाई।
और कहता है यह चक्र हमारा कदम कभी न रूकेगा।
हिन्द देश का प्यारा....

शान हमारी यह झंडा है यह अरमान हमारा,
ये बल पौरूष सदियों का, ये बलिदान हमारा,
आसमान में फहराये यह सागर में लहराये,
जहाँ-जहाँ यह जाये झंडा यह संदेश सुनाए,
है आजाद हिन्द ये दुनिया को आजाद करेगा,
हिन्द देश का प्यारा...

नहीं चाहते हम दुनिया को अपना दास बनाना,
नहीं चाहते हम औरों की मुँह की रोटी खा जाना,
सत्य, न्याय के लिए हमारा लहू सदा बहेगा,
हिन्द देश का प्यारा....

हम कितने सुख सपने लेकर इसको फहराते हैं,
इस झंडे पर मर-मिटने की कसम सभी खाते हैं,
हिन्द देश का झंडा घर-घर में लहरायेगा,
हिन्द देश का प्यारा...

हिन्द देश के निवासी

हिन्द देश के निवासी सभी जन एक हैं,
रंग-रूप, वेश-भाषा चाहे अनेक हैं।
बेला-गुलाब-जूही, चम्पा-चमेली,
प्यारे-प्यारे फूल गूँथे माला में एक हैं।
कोयल की कूक न्यारी, पपीहे की टेर प्यारी
गा रही तराना बुलबुल, राग मगर एक है।
गंगा-यमुना-ब्रह्मपुत्र, कृष्णा-कावेरी,
जाके मिल गई सागर में, हुई सब एक हैं।
धर्म हैं अनेक जिनका, सार वही है,
पंथ हैं निराले सबकी, मंजिल तो एक है।

विजयी विश्व तिरंगा

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा,
झंडा ऊँचा रहे हमारा। × २

सदा शक्ति बरसाने वाला
प्रेम सुधा बरसाने वाला,
वीरों को हर्षाने वाला,
मातृभूमि का तन-मन सारा × २

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा,
झंडा ऊँचा रहे हमारा। × २

शान न इसकी जाने पाये,
चाहे जान भले ही जाये,
विश्व विजय करके दिखलाये,
तब होवे प्रण पूर्ण हमारा, × २

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा,
झंडा ऊँचा रहे हमारा। × २

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा।।२।।
हम बुलबुले हैं इसकी, ये गुलिस्ताँ हमारा-हमारा।।
सारे जहाँ से अच्छा...

गुरबत में हों अगर हम, रहता है दिल वतन में।।२।।
समझो वहीं हमें भी, दिल हो जहाँ हमारा-हमारा।।
सारे जहाँ से अच्छा...

पर्वत वो सबसे ऊँचा, हम साया आसमाँ का।।२।।
वह सन्तरी हमारा, वह पासवाँ हमारा-हमारा।।
सारे जहाँ से अच्छा...

गोदी में खेलती है जिसकी हजारों नदियां।।२।।
गुलशन है जिनके दम से, रश्क-ए-जिनां हमारा-हमारा।।
सारे जहाँ से अच्छा...

मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना।।२।।
हिन्दी हैं हम× ३ वतन है, हिन्दोस्तां हमारा-हमारा।।
सारे जहाँ से अच्छा...

युनान, मिस्त्रों, रोमा, सब मिट गये जहाँ से।।२।।
अब तक मगर है बाकि, नामों निशां हमारा-हमारा।।
सारे जहाँ से अच्छा...

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।।२।।
सदियों रहा है दुश्मन, दौरे जमां हमारा-हमारा।।
सारे जहाँ से अच्छा...

'इकबाल' कोई मरहम, अपना नहीं जहाँ में।।२।।
मासूम क्या किसी को, दर्द-ए-निहाँ हमारा-हमारा।।
सारे जहाँ से अच्छा...

कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

लहरों से उठकर नौका पार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।।

एक नन्हीं चींटीं जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दिवारों पर सौ बार फिसलती है,
मन का विश्वास रगों में साँस भरता है,
चढ़ कर गिरना, गिर कर चढ़ना ना अखरता है,
मेहनत उसकी आखिर, बेकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।।

डुबकियां सिन्धु में गोताखोर लगाता है, -२
जा-जा कर खाली हाथ लौट आता है,
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में,
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।।

असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करो
क्या कमी रह गयी देखो, और सुधार करो,
जबतक ना सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम,-२
संघर्ष का मैदान छोड़कर मत भगो तुम।
कुछ किये बिना यूँ ही जय जयकार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

- सोहन लाल द्विवेदी

कविता- हिमाद्री तुंग शृंग से

हिमाद्री तुंग शृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती-
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला
स्वतंत्रता पुकारती
'अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़-प्रतिज्ञ सोच लो
प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढे चलो, बढ़े चलो।'
असंख्य कीर्ति-रश्मियाँ
विकीर्ण दिव्य दाह-सी
सपूत मातृभूमि के-
रूको न शूर साहसी
अराति सैन्य सिंधु में, सुवाड़वाग्नि से चलो
प्रवीर हो जयी बनो, बढ़े चलो, बढ़े चलो!

\- जयशंकर प्रसाद

कविता- शक्ति और क्षमा

क्षमा भोभती उस भुजंग को, जिसक पास गरल हो,
उसको क्या, जो दंतहीन, विषहीन विनीत सरल हो।

तीन दिवस तक पंथ मांगते, रघुपति सिन्धु किनारे
बैठ पढते रहे छंद, अनुनय के प्यारे-प्यारे,
उत्तर में जब एक नाद भी, उठा नहीं सागर से,
उठी अधीर धधक पौरूष से, आग राम के भार से,
सिंधु देह धर ''त्राहि-त्राहि''- करता आ गिरा शरण में,
चरण पूज, दासता ग्रहण की, बँधा मूढ़ बंधन में।

सहनशीलता, क्षमा, दया को तभी पूजता जग है।
बल का दर्प चमकता, उसके पीछे जब जगमग है।

-रामधारी सिंह 'दिनकर'

स्वागत गीत –१

स्वागतम है आपका, आगमन है आपका, × २
जिस चमन के फूल हम, वो चमन है आपका,
स्वागतम है..... × २

आप आये हैं यहाँ, फिर बहार आ गयी, × २
बागवाँ चमन के हम, गुलिस्तां है आपका,
स्वागतम है... × २

पुष्पमाल हम लिये, विजयढ़ाल हम लिए, × २
स्नेहदीप के लिए, स्वागतम है आपका,
स्वागतम है.... × २

फूल-फूल खिल उठा, कलि-कलि भी हँसी, × २
हर कली के फूल हम, गुलिस्तां है आपका,
स्वागतम है..... × २

स्वागत गीत –२

तर्जः मैं ना भूलूंगी
अभिनन्दन करते हैं, हम वन्दन करते हैं।
पलकों के आँचल में हम सब खुशियां भरते हैं।
श्रीमान् आप पधारे ओ हो धन्य है भाग हमारे।
फूल नहीं है दिल में हम न्यौछावर करते हैं।
पलकों के आँचल में......

खुशी से दिल भर आया, ओ हो लता सा मन लहरायें।
हृदय प्रफुल्लित मन अति पुलकित गीत संवरते हैं।
पलकों के आँचल में.....

सुविचार

- विद्या के समान कोई नेत्र नहीं है। — वेदव्यास
- विद्या कामधेनु गाय है। — चाणक्य
- बिना अभ्यास के विद्या विष के समान है। — अज्ञात
- विद्या अमूल्य और अभावक धन है। — ग्लैडस्टन
- विद्या स्वयं ही शक्ति है। — बेकन
- जिसके पास विद्या रुपी नेत्र नहीं, वह अन्धे के समान है। — हितोपदेश
- सुकर्म विद्या का अन्तिम लक्ष्य होना चाहिए। — सर पी. सिडनी
- विद्या के अतिरिक्त और कोई श्रेष्ठ दान नहीं है। —फुलर
- सदाचार और निर्मल जीवन सच्ची शिक्षा का आधार है। — महात्मा गाँधी
- शिक्षा का महान उद्देश्य ज्ञान नहीं कर्म है। — हर्बट स्पेन्सर
- शिक्षा जीवन की परिस्थितियों का सामना करने की योग्यता का नाम है। —जे. जी. हिबन
- शिक्षा का ध्येय चरित्र निर्माण है। — हर्बट स्पेन्सर
- Knowledge itself is power. -Bacon
- उठो, जागो और तब तक नहीं रुको जब तक लक्ष्य ना प्राप्त हो जाये। — विवेकानन्द
- यदि अवसर का लाभ न उठाया जाए, तो योग्यता का कोई मूल्य नहीं होता है। —नेपोलियन
- बिना घर्षण के हीरे पर चमक नहीं आती है, बिना संघर्ष के मनुष्य पर निखार नहीं आता है।
- कुछ भी भला अथवा बुरा नहीं है, केवल सोंचने का ढंग उसको भला अथवा बुरा बना देता है। — शेक्सपीयर

  (There is nothing either good or bad, but thinking makes it so.)
- कष्ट और क्षति सहने के बाद मनुष्य अधिक विनम्र और ज्ञानी हो जाता है। — फ्रैंकलीन
- ''आप अपना भविष्य नहीं बदल सकते पर आप अपनी आदतें बदल सकते हैं और निश्चित रूप से आपकी आदते आपका भविष्य बदल देगी।'' — अब्दुल कलाम
- A child is the father of man. – William Wordsworth
- A little progress everyday adds upto big result.
- Slow and steady wins the race.
- It's better to be alone than to be in bad company.

  बुरी संगत के अपेक्षा अकेला होना अधिक अच्छा है। — जॉर्ज वाशिंगटन
- ''अच्छा विचार रखना भीतरी सुन्दरता है।'' — स्वामी रामतीर्थ
- ''सपने वे नहीं, जो आप सोते वक़्त देखते हैं, सपने वो हैं, जो आपको सोने नहीं देते।'' — अब्दुल कलाम
- There is no treasure like knowledge. – Hazarat Ali

महत्वपूर्ण दिवस

- 14 अप्रैल – अम्बेडकर जयन्ती
- 05 जून– विश्व पर्यावरण दिवस
- 21 जून– योग दिवस, सूर्य कर्क रेखा पर पहुँचता है।
- 01–15 जुलाई– विद्यालय सुरक्षा पखवाड़ा
- 04 जुलाई– विद्यालय सुरक्षा दिवस
- 11 जुलाई– विश्व जनसंख्या दिवस
- 09 अगस्त– बिहार पृथ्वी दिवस
- 15 अगस्त– भारत का स्वतंत्रता दिवस
- 27 अगस्त– मदर टेरेसा का जन्म दिवस
- 29 अगस्त– राष्ट्रीय खेल दिवस
- 05 सितम्बर– शिक्षक दिवस
- 08 सितम्बर– विश्व साक्षरता दिवस
- 02 अक्टूबर– महात्मा गांधी एवं लाल बहादुर शास्त्री जयंती
- 11 अक्टूबर– लोकनायक जयप्रकाश नारायण जयंती
- 15 अक्टूबर– अब्दुल कलाम का जन्म दिवस
- 11 नवम्बर– शिक्षा दिवस, मौलाना अबुल कलाम आजाद का जन्म
- 14 नवम्बर– बाल दिवस, जवाहर लाल नेहरू जन्म दिवस
- 20 नवम्बर– विश्व बाल अधिकार दिवस
- 26 नवम्बर– संविधान दिवस
- 03 दिसम्बर– विश्व दिव्यांग दिवस
- 22 दिसम्बर– गणित दिवस, सूर्य मकर रेखा पर पहुँचता है।
- 25 दिसम्बर– क्रिसमस दिवस, अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म दिवस
- 10 जनवरी– विश्व हिन्दी दिवस
- 12 जनवरी– विश्व युवा दिवस
- 23 जनवरी– सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती
- 26 जनवरी– भारतीय गणतंत्र दिवस
- 30 जनवरी– शहीद दिवस, महात्मा गांधी की पुण्य तिथि
- 28 फरवरी– राष्ट्रीय विज्ञान दिवस
- 08 मार्च – अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस
- 22 मार्च– बिहार दिवस, विश्व जल दिवस

दिवस ज्ञान की विस्तृत जानकारी लिए QR code स्कैन कीजिए।

नारा - स्कूल चलो अभियान

कोई न छूटे अबकी बार,
शिक्षा है सबका अधिकार।

हिन्दू-मुस्लिम, सिख-इसाई,
मिलकर के सब करे पढ़ाई।

आधी रोटी खायेंगे,
स्कूल ज़रूर जायेंगे।

अब ना करो अज्ञानता की भूल,
हर बच्चे को भेजो स्कूल।

एक भी बच्चा छूटा,
संकल्प हमारा टूटा।

घर-घर विद्या दीप जलाओ,
अपने बच्चे सभी पढ़ाओ।

पढ़ेंगे पढ़ायेंगे,
उन्नत देश बनायेंगे।

अनपढ़ होना है अभिशाप,
अब न रहेंगे अंगूठा छाप।

शिक्षा से देश सजाएंगे,
हर बच्चे को पढ़ाएंगे।

21वीं सदी की यही पुकार,
शिक्षा है सबका अधिकार।

हर घर में चिराग जलेगा,
हर बच्चा स्कूल चलेगा।

लड़का लड़की एक समान,
यही संकल्प, यही अभियान।

मम्मी पापा हमें पढ़ाओ,
स्कूल में चलकर नाम लिखाओ।

बहुत हुआ अब चूल्हा-चौका,
लड़कियों को दो पढ़ने का मौका।

हम भी स्कूल जाएंगे,
पापा का मान बढ़ाएंगे।

दीप से दीप जलाएंगे,
साक्षर देश बनाएंगे।

मिड डे मील हम खाएंगे,
स्कूल में पढ़ने जाएंगे।

शिक्षा ऐसी सीढ़ी है,
जिससे चलती पीढ़ी है।

समग्र शिक्षा का है कहना,
पढ़ने जायें भाई बहना।

समग्र शिक्षा का अभियान,
सबको मिले प्राथमिक ज्ञान।

पापा सुन लो विनय हमारी,
पढ़ने की है उम्र हमारी।

बच्चे मांगे प्यार दो,
शिक्षा का अधिकार दो।

हम बच्चों का नारा है,
शिक्षा अधिकार हमारा है।

शिक्षक अभिभावक और सरकार।
दें बच्चों को शिक्षा अधिकार।।

मार्चिंग

मार्चिंग कर अर्थ पंक्ति में हाथ मिलाते हुए चलना होता है।

पंक्ति का निर्माणः शिक्षक का आदेश होता है **'लम्बे दाहिने छोटे बायें एक पंक्ति में कदवार'**। इस आदेश पर सभी छात्रों को एक पंक्ति में लम्बाई के हिसाब से खड़ा होना चाहिए।

खड़ा होने का तरीकाः सर्वप्रथम सावधान की स्थिति। सावधान में दोनों पैर की एड़ी को मिलाते हुए 45° का कोण बनाना। दोनों हाथ पैंट की सिलाई के बगल में, हल्की मुट्ठी बंधी हुई, अंगूठा सामने। सावधान में निगाह सामने।

विश्रामः विश्राम में दाँयें पैर को स्थिर रखना है तथा बायें पैर को बगल में ले जाना है। दोनों पैरों के बीच फासला 12 इंच हो। हाथ पीछे ले जाना, बाँयें तलहथ्थी पर दाँया तलहथ्थी रखना चाहिए। निगाह सामने कोई हरकत नहीं।

आराम की स्थितिः इस स्थिति में कमर से ऊपर हरकत कर सकते हैं तथा बात-चीत भी कर सकते हैं।

पीछे मुड़ः इसमें दाँये से पीछे मुड़ना होता है। दाँये पैर की एड़ी तथा बायें पैर में चौए की हरकत कर पीछे मुड़ा जाता है।

कदम तालः सावधान की स्थिति में बाँयें पैर को 6′′ उठाते हुए जमीन पर पटकना पड़ता है। मुट्ठी पैंट की सिलाई के बगल में। दो में दाँया पैर जमीन पर। इस तरह कदम ताल की क्रिया करते हैं। अच्छा मार्चिंग के लिए अभ्यास जरूरी है।

दाहिने देखः मार्च-पास्ट में दाहिने देख का महत्व है। वार्षिक खेल-कूद प्रतियोगिता के अवसर पर मार्च पास्ट प्रतियोगियों के लिए आवश्यक हो गया है। तीन पंक्तियों में, जितने छात्र हैं मार्च करते हैं। मार्च करते हुए **दाहिने देख** का आदेश झंडा पकड़ने वाला नायक अर्थात् कप्तान द्वारा दिया जाता हैं। इसमें देख दाँये पैर पर बोला जाता है, बाँया पैर ज्यों निकलता है उसके साथ सबों की निगाह दाँयें झंडे के तरफ चला जाता है। हाथ दोनों चलते रहता है। दाहिना गाइड केवल सामने देखता है। लीडर दाहिने झंडे को झुकाते हुए स्वयं दाहिने देखता है। दाहिने देख का आदेश फहरते हुए विद्यालय झंडे के 6 कदम पहले दिया जाता है। पुनः **'सामने देख कर'**

का आदेश होता है। सभी आदेश पर सामने देखते हैं। गाईड के पास अगर झंडा नहीं है तो वह सलामी देता है। सलामी मात्र गाइड ही दे सकता है।

सलामी देनाः सलामी देते समय गाईड दाहिना हाथ ऊपर उठाता है। हाथ की 3 ऊँगलियाँ खुल जाती है। भौं के पास तर्जनी ऊँगली र्स्पश करती है। मार्च पास्ट का अभ्यास प्रति दिन जरूरी है। अन्यथा मार्च-पास्ट मखौल बन जाता है। **'दाहिने से सज जा'** का आदेश होता है। इस पर छात्र दाँये देखते हुए पंक्ति सीधी करते हैं। दाहिने सज का अर्थ दाँयें हाथ उठाते हुए पंक्ति सीधी करना होता है। इसके बाद एक दो में गिनती करना- एक नम्बर को विषम संख्या तथा दो नम्बर को सम संख्या कहते हैं। आदेश होता है- **'विषम संख्या अपनी जगह तथा सम संख्या खुली लाईन चल।'** इसमें दो नम्बर वाला छात्र दो कदम आगे बढ़ाते हुए आगे बढ़ता है। पुनः आदेश होता है- **'निकट लाईन चल',** इसमें पुनः दो कदम पीछे चलना पड़ता है। खुली लाईन चलने के पश्चात् आदेश होता है- 'एक नम्बर दाहिने तथा दो नम्बर बाँयें लाईन दाँये बायें मुड़।'

बाँये दाहिने मुड़नाः दाँयें पैर की एड़ी तथा बाँये पैर के चौए के साथ मुड़ना पड़ता है। गिनती होती है- एक, दो, तीन, एक। बाँये मुड़ते समय बाँये पैर की एड़ी तथा दाँये पैर के चौए के साथ मुड़ना पड़ता है।

तेज चलः तेज चल के साथ तीन पंक्ति में छात्र चलते हैं। तेज चल में पहले बाँये पैर को झटके के साथ आगे निकालना, उसके साथ दाहिना हाथ मुट्ठी बाँधते हुए आगे निकालना चाहिए। पैर रखते समय एड़ी जमीन पर स्पर्श करे। दो दाँये पैर आगे साथ ही बाँया हाथ आगे ले जाना चाहिए।

आधा दायें मुड़नाः दांये पैर की एड़ी तथा बांये पैर के चौए के साथ मुड़ा जाता है। मुट्ठी बंधी हुई तथा पैर की सिलाई के बगल में हाथ, निगाह सामने।

मध्य से तेज चलः इसमें छात्रों को तीन पंक्तियों में सामने मध्य से तेज चलने का आदेश होता है।

झंडोत्तोलन

स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस के अवसर पर झंडा फहराने में अंतर होता है। 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर झंडे को नीचे से रस्सी द्वारा खींच कर ऊपर ले जाया जाता है, फिर खोलकर फहराया जाता है, जिसे ध्वजारोहण कहा जाता है। क्योंकि यह 15 अगस्त 1947 की ऐतिहासिक घटना को सम्मान देने हेतु किया जाता है जब प्रधानमंत्री जी ने ऐसा किया था। संविधान में इसे अंग्रेजी में (Flag Hoisting) कहते हैं। जबकि 26 जनवरी गणतंत्र दिवस के अवसर पर झंडा ऊपर ही बंधा रहता है, जिसे खोल कर फहराया जाता है, संविधान में इसे झंडा फहराना या अंग्रेजी में (Flag unfurling) कहते हैं।

झंडा फहराने के कुछ नियमः

1 राष्ट्रीय झंडा तिरंगा पर तीन अलग-अलग रंगों (ऊपर से नीचे क्रमशः केसरिया, श्वेत, हरा) की पट्टियां होगी जो समान चौडाई की वाली आयताकार होगी। सफेद रंग की पट्टी के बीचों बीच नेवी ब्लू रंग में 24 धारियों वाला अशोक चक्र होगा।

2 झंडे की लम्बाई और चौडाई का अनुपात 3:2 होगा।

3 झंडा फटा या मैला-कुचैला ना हो।

4 किसी दूसरे झंडे या पताका को राष्ट्रीय झंडे से ऊँचा या बराबर में न रखें। माला, पुष्प, हार, प्रतीक जैसी कोई चीज ध्वज दण्ड पर नहीं रखी जानी चाहिए।

5 सूर्यास्त के पहले झंडे को आदर के साथ धीरे-धीरे उतारना चाहिए।

6 अगर अन्य झंडा भी फहराया गया हो तो राष्ट्र ध्वज को सदैव दाहिनी ओर रखना चाहिए।

राष्ट्रगान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता।
पंजाब-सिन्धु-गुजरात-मराठा,
द्राविड़-उत्कल-बंग।
विंध्य हिमाचल यमुना गंगा,
उच्छल जलधि तरंग
तब शुभ नामे जागे,
तब शुभ आशिष मागे।
गाहे तब जय-गाथा।
जन-गण-मंगलदायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।

राष्ट्रगीत

वन्दे मातरम्
सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्यश्यामलां मातरम्।
वन्दे मातरम्।।
शुभ्र-ज्योत्स्ना-पुलकित-यामिनीम्
फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीम्
सुहासिनीं, सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां, वरदां, मातरम्।
वन्दे मातरम्।।

जयघोष

भारत माता की	- जय
भारतीय संस्कृति की	- जय
वन्दे	- मातरम्
महात्मा गाँधी	- अमर रहें
सुभाषचन्द्र बोस	- अमर रहें
जवाहरलाल नेहरू	- अमर रहें
वीर भगत सिंह	- अमर रहें
भीमराव अम्बेडकर	- अमर रहें
अमर शहीदों की	- जय
इंकलाब	- जिन्दाबाद
एक बनेंगे	- नेक बनेंगे
हम बदलेंगे	- युग बदलेगा
हम सुधरेंगे	- युग सुधरेगा
विचार क्रान्ति अभियान	- सफल हो
ज्ञान यज्ञ की लाल मशाल	- नहीं बुझेगी, सदा जलेगी
ज्ञान यज्ञ की ज्योति जलाने	- हम घर-घर में जायेंगें
नया समाज बनायेंगे	- नया जमाना लायेंगे
जन्म जहाँ पर	- हमने पाया
अन्न जहाँ का	- हमने खाया
ज्ञान जहाँ का	- हमने पाया
वस्त्र जहाँ का	- हमने पहना
वह है प्यारा	- देश हमारा
देश की रक्षा कौन करेगा	- हम करेंगे, हम करेंगे
युग निर्माण कैसे होगा	- व्यक्ति के निर्माण से
माँ का मस्तक ऊँचा होगा	- त्याग और बलिदान से
मानव मात्र	- एक समान
नर और नारी	- एक समान
जाति-वंश सब	- एक समान
हमारी युग निर्माण योजना	- सफल हो
हमारी युग निर्माण संकल्प	- पूर्ण हो